International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED), ISSN: 2320-8708
Vol. 3, Issue 3, May-June, 2015, pp: (47-53), Impact Factor: 1.267, Available online at: www.erpublications.com

युगबोध और प्रेमचंद की कहानियॉं

डॉ. सुरेश कुमार

गांव + डाकखाना– चुलियाणा

जिला– रोहतक

हरियाणा

शोध – आलेख सार

'युगबोध' किसी कालखण्ड विशेष के सम्पूर्ण परिवेश का सूचक है। युगबोध दो शब्दों 'युग' और बोध' से मिलकर बना है । 'युग' शब्द काल–सापेक्ष है । बोध का सम्बन्ध जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों के बोध से भी है । जीवन मूल्य जब व्यापक समाज द्वारा स्वीकृत हो जाते हैं, तब वे एक युग विशेष की मान्यता प्राप्त कर लेते हैं । 'युग' शब्द के विश्लेषण के लिए तीन आधारों की अनिवार्यता होती है । ये आधार हैं – काल, घटना और व्यक्ति ।

मुख्य शब्द : युगबोध, सांस्कृतिक मूल्य, जीवन मूल्य, समसामयिक बोध ।

'युगबोध' किसी कालखण्ड विशेष के सम्पूर्ण परिवेश का सूचक है। युगबोध दो शब्दों 'युग' और बोध' से मिलकर बना है । 'युग' शब्द काल–सापेक्ष है । बोध का सम्बन्ध जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों के बोध से भी है । जीवन मूल्य जब व्यापक समाज द्वारा स्वीकृत हो जाते हैं, तब वे एक युग विशेष की मान्यता प्राप्त कर लेते हैं । 'युग' शब्द के विश्लेषण के लिए तीन आधारों की अनिवार्यता होती है । ये आधार हैं – काल, घटना और व्यक्ति ।

'युग' शब्द का विश्लेषण करते हुए प्रोफेसर हुकुमचंद राजपात लिखते हैं – 'युग' शब्द अपनी व्याप्ति में सम्पूर्ण मानव संस्कृति का काल सापेक्ष अर्थ देता है । जब हम हिन्दी साहित्य के इतिहास के संदर्भ में किसी विशिष्ट युग अथवा काल की चर्चा करते हैं तो उस युग की सामान्य प्रवृत्तियों, परिस्थितियों एवं उपलब्धियों का अर्थ बोध हो जाता है ।''1 विशेष बात यह है कि युग के बदलाव के साथ ही अतीत की सभी मान्यताऍं और परम्पराऍं धीरे–धीरे तिरोहित हो जाती है और उनका स्थान नई मान्यताऍं स्थान ले लेती हैं ।

बोध को अंग्रेजी में Approach realization कहते हैं । आज 'युग' शब्द के साथ 'बोध' शब्द का प्रयोग व्यापक संदर्भ में हो रहा है । इसी बोध के कारण व्यक्तियों में चेतना, विकास एवं संदर्भ की स्थिति पनपती है । 'बोध' शब्द इन्द्रियानुभूति के माध्यम से किसी वस्तु की स्थिति का परिज्ञान कराता है, जिसमें समय सापेक्षता अधिक रहती है । डॉ. रामविलास शर्मा ने 'बोध' शब्द को परिभाषित करते हुए लिखा है – ''बोध' से तात्पर्य है किसी वस्तु, विषय, धारा अथवा व्यवहार का ज्ञान ।....वैज्ञानिक भौतिकवाद के अनुसार मनुष्य प्रकृति की उपज है और बोध मस्तिष्क में निहित पदार्थ का गुण है, प्रकृति के अंश का गुण है।''2

वस्तुतः प्रत्येक काल का अपना एक बोध होता है । लगातार परिवर्तित होते रहना बोध का अनिवार्य गुण है । यह बोध विविधता ही 'युगबोध' का मुख्य आधार है ।

युगबोध का सम्बन्ध व्यक्तिबोध से न होकर सामूहिक भावना में निहित अनुभूत्यात्मक भावों से होता है। 'युगबोध' किसी व्यक्ति विशेष का बोध न होकर पूरे समूह का बोध होता है । एक कालखण्ड की विशेष परिस्थितियों का मानव द्वारा ग्रहीत सम्यक् ज्ञान का बोध ही 'युगबोध' कहलाता है । युगबोध को परिभाषित करते हुए डॉ. मदनमोहन लिखते हैं –'युगबोध' दो शब्दों के संयोग से से निष्पन्न वह शब्द–युग्म है जिसे सामान्य बोलचाल की भाषा में समसामयिक परिस्थितियों का परिज्ञान के अर्थों में प्रयोग किया जाता है । 'युग' शब्द का कोशगत अर्थ है – समय अथवा काल तथा 'बोध' की प्रतीति, ज्ञान, जानकारी अथवा किसी से अस्तित्व, प्रकार, स्वरूप आदि होने वाला मानसिक ज्ञान । इस दृष्टि से 'युगबोध' का अभिप्राय हुआ–किसी काल विशेष की परिस्थितियों अथवा विशेषताओं आदि का सम्यक् ज्ञान ।3 युगबोध समय और समय की गति को व्यंजित करता है । अपने देशकाल, युगीन विचारधारा, आचार–विचार, भाषा और वेशभूषा आदि के प्रति जब व्यक्ति सजग होता है । तब वह सजगता 'युगबोध' कहलाती है । इसी सजगत के परिणामस्वरूप जब लेखक ने आधुनिक जीवन दृष्टि, सामाजिक चेतना तथा राष्ट्रीय चेतना का समावेश होता है तो कल्पना और आदर्श का आकर्षण उसकी दृष्टि में कम हो जाता है । इसकी जीवन दृष्टि व्यावहारिक और यथार्थपरक हो जाती है।

प्रत्येक युग का बोध पूर्ववर्ती युग के बोध से कुछ अर्थों में समान और कुछ अर्थों में भिन्न होता है। समानता वाले बोध का नाम ही परम्परा है । युगबोध परम्परा से पूर्णतया विच्छिन्न नहीं होता, किन्तु वह नवीन तत्वों से युक्त होने के कारण अपनी निजी पहचान की अभिव्यक्ति कराता है । इन नवीन तत्वों को ही आधुनिकता बोध कहा जाता है । युगबोध और आधुनिकता बोध के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए डॉ. शंभुनाथ सिंह लिखते हैं – ''युगबोध बना बनाया फार्मूला नहीं है, जिसे नपे–तुले शब्दों में बता दिया जाए कि अमुक बातें युगबोध हैं, युगबोध वस्तुतः आधुनिकता बोध का ही पर्याय है । आधुनिकता बोध और युगबोध अनेक बिन्दुओं पर एक होते हुए भी एक –दूसरे से भिन्नता रखते हैं । वर्तमान में विचार परिवेश और चेतना को युगबोध के अन्तर्गत रखा जा सकता है।''

साहित्य और समाज के सम्बन्धों में जान डालने का काम युगबोधीय चेतना ही करती है । समाज में युगचेतना से ही साहित्यकार की पहचान और युगबोध ही उसके साहित्य का प्रतिमान। जो कुछ साहित्यकार करता है उसकी शक्ति और प्रेरणा उसे समाज से मिलती है, जिसका उपयोग वह समाज के हित के लिए करता है । जिस रचना में युगबोध की अभिव्यक्ति जितनी प्रबल होगी वह साहित्य उतना ही जीवन्त होगा । प्रत्येक युग और देश का साहित्य परम्परा से रस ग्रहण करता है, युग जीवन से प्रभावित होता है तथा नवीन विचारधाराओं और चिन्तन धाराओं से प्रेरणा ग्रहण करता है । युगबोध एक काल सापेक्ष प्रवाह है, जो मानव समाज और उसकी धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश से गुथा रहता है । आज के युगबोध का मुख्य आधार आज की परिस्थितियों का यथार्थ ज्ञान है । वस्तुतः जिस लेखक का संकल्प जितना महान् होता है उसके साहित्य में युगबोध की क्षमता उतनी ही अधिक होती है, क्योंकि युगबोध साहित्यकार की वह प्राणशक्ति है जिसके आधार पर वह साहित्य–सृजन करता है और अपने साहित्य को युग साहित्य के साथ में प्रतिष्ठित करने का दृढ़संकल्प करता है ।

युगबोध और समसामयिक बोध

काल खण्ड का बोध ही समसामयिक बोध है । युगबोध का दायरा समसामयिक बोध से बड़ा होता है। युग की सम्पूर्ण समस्याओं के प्रतिक्रिया स्वरूप उत्पन्न संवेदना को समेट पाना युगबोध जैसे व्यापक कलेवर का ही काम है । इसके लिए भावुकता की नहीं बल्कि अनुभव और चिन्तन की आवश्यकता होती है। समसामयिकता का संबंध 'समय' से है जबकि युगबोध का सम्बन्ध पूरे युग की संवेदना से होता है।

समसामयिकता में युग का तटस्थ रूप से चित्रण होता है, जबकि युगबोध में आलोचनात्मक ढंग से निर्णय लिया जाता है । कोई भी सजग रचनाकार अपने समय से बचकर नहीं रह सकता । समसामयिक साहित्य को प्रभावित करती रहती हैं । साहित्य में समसामयिकता के साथ शाश्वत मूल्य जुड़े होते हैं । इसी के माध्यम से कोई कृति कालजयी बनती है । रजानीति और साहित्य का घनिष्ट सम्बन्ध होता है । इसलिए राजनीति के सर्वव्यापी रूप से कोई भी साहित्यकार अछूता नहीं रह सकता । मुंशी प्रेमचन्द का कथन है– ''साहित्य राजनीति के पीछे चलने वाली चीज नहीं है, उसके आगे–आगे चलने वाली एडवांस गार्ड है । वह उस विद्रोह का नाम है जो मनुष्य के ह्रदय में अन्याय, अनीति और कुरुचि से उत्पन्न होती है ।''4

युगबोध और साहित्य की प्रयोजनीयता

साहित्य की प्रयोजनीयता उसके अच्छा और बुरा होने की कसौटी है । मानव जीवन की वास्तविकता ही साहित्य मूल्यांकन का सही मानदंड हो सकता है । मनुष्य सामाजिक सम्बन्ध, विचार, शिल्प, ज्ञान और नैतिक मान्यताएँ आदि सभी कुछ वास्तविकता के अंदर आते हैं । सच्चा साहित्य वस्तु और व्यंजना दोंनों को सामंजस्यपूर्ण ढंग से आत्मसात करता है, किन्तु निर्णायक भूमिका विषय विषय–वस्तु ही निभाती है । जनवादी साहित्य में उस कला को ग्राह्य माना गया है जो जनगण के जीवन, विचार और आकांक्षाओं से सम्बन्द्ध होती है । साहित्य जनगण का आइना होता है । जो साहित्य संसार को बदलने और उसे दिशा प्रदान करने की प्रेरणा प्रदान करता है, वह उतना ही उत्कृष्ट माना जाता है । साहित्य की प्रयोजनीयता का सम्बन्ध उसकी क्षमता, प्रयत्नशीलता, अनुभूति, प्रौढ़ता, प्रेषणीयता तथा शिल्पगत सौंदर्य से है । प्रेमचंद के अनुसार ''साहित्य हमारे जीवन को स्वाभाविक और स्वाधीन बनाता है ।''5 श्रेष्ठ साहित्य वह है जो जीवन की व्यापक एवं सर्वांगीण रूप को विश्लेषित करता है । सामाजिक जीवन का व्यापक बोध और उसकी संवेदना साहित्य की मूल वस्तु है । साहित्य वही गौरवशाली बन पाता है, जिसमें कलात्मक सुघरता के साथ–साथ कर्मशीलता का संदेश भी हो । एक श्रेष्ठ साहित्यकार अपनी गहरी संवेदना, अन्तर्दृष्टि और व्यापक अनुभूति से समाज को नई गति व नई दिशा देता है । श्रेष्ठ साहित्यकार युगबोध को साथ लेकर चलता है । जिस साहित्य में युगबोध की क्षमता जितनी अधिक होगी वह साहित्य उतना ही वृहत्तर जनसमुदाय के मानस जगत् को सुसंस्कृत एंव समुन्नत करेगा और उसकी प्रयोजनीयता उतनी ही सार्थक सिद्ध होगी । युगबोध के प्रति सजग रचनाकार ही अपने साहित्य की प्रयोजनीयता को प्रमाणित करता है ।

प्रेमचंद के कहानी साहित्य में युगबोध के विविध आयाम

प्रबुध साहित्यकार व्यक्ति विशेष को सामाजिक दृष्टिकोण से देखता है जिसके फलस्वरूप उसका साहित्य युगबोध से ओतप्रोत हो जाता है । युगबोध के बल पर ही लेखक वर्तमान पर प्रकाश डालता है और वर्तमान एवं भूत की तुलना करते हुए भविष्य के लिए मार्ग प्रशस्त करता है । समाज की हलचलों को साहित्यकार सूक्ष्मता से ग्रहण करता है । जिस साहित्य में युगद्रष्टा और युगचेष्टा की चेतना में समन्वय पाया जाता है वह साहित्य युग साहित्य कहलाता है । युगबोध से ओतप्रोत साहित्य ही युग का वास्तविक चित्र खींचने में समर्थ होता है । युग के साथ चलने वाला एवं युग के समग्र स्वरूप को सर्वथा न्यायसंगत दृष्टि से देखने वाला साहित्यकार ही प्रगतिशील साहित्यकार कहलाने का अधिकारी होता है । जीवन्त और कालजयी साहित्य सृजन के लिए लेखक को युगचेतना से सम्पृक्त होना ही पड़ता है । युगबोध युग के सम्पदनों से अनुप्राणित, प्रभावित एंव प्रेरित होता है । वस्तुतः युगबोध विशेष कालखंड़ों की सांस्कृतिक एवं बौद्धिक चेतना की जीवन्त प्रवृत्तियों का ही नाम है ।

आरम्भिक कहानियों में प्रेमचन्द ने सुधारवादी आदर्शों को ही अपनाया है । समाज के अन्तर्विरोध से प्रेरित होकर 'पूस की रात' और 'कफन' कहानियाँ लिखीं । इन दो कहानियों में प्रेमचंद ने समाज की अनेक समस्याओं का पर्दाफाश किया है । 'कफन' कहानी में प्रेमचंद ने विषमतामूलक समाज के ढांचे पर प्रहार किया है । इस कहानी में यह दर्शाया गया है कि घीसू और माधव के जीवन की सारी आग बुझकर अलाव की तरह

ठंडी पड़ गई है । 'पूस की रात' का हल्कू किसी तरह पेट काटकर तीन रुपये कम्बल खरीदने के लिए जुटाता है । लेकिन जब जमींदार का आदमी रूपये लेने के लिए हल्कू के पास आता है तो गालियों के डर से तीन रूपये उसे दे देता है और पूस की ठंडी रात में खेतों में कॉपता है। मुन्नी हल्कू से कहती है ''मैं कहती हूँ तुम खेती छोड़ क्यों नहीं देते ।'' रूपये निकालकर देती हुई उसकी आत्मा कहती है कि मजूरी से सुख की एक रोटी मिलेगी । किसी की धौंस तो नहीं रहेगी । मजूरी करके लाओ, वो भी उसी मैं झोंक दो, ऊपर से धौंस । मुन्नी के ये शब्द संवेदनात्मक सूचना देते हैं कि किसान अब खेती से ऊब चुका है । वह महाजन, पंडे, पुजारी, दरोगा, पटवारी आदि के शोषण से मुक्त होना चाहता है पूस की रात का चित्रण प्रेमाचंद यों प्रस्तुत करते हैं – ''पूस की अंधेरी रात! आकाश पर तारे ठिठुरते हुए महसूस होते थे । हल्कू अपने खेत के किनारे ऊंख के पत्तों की एक छतरी के नीचे बॉस के खटोले पर अपनी पुरानी गाढ़े की चादर ओढ़े कॉप रहा था । खाट के नीचे उसका संगी कुत्ता जबरा पेट में मुंह डाले सर्दी से कूँ–कूँ कॉप रहा था । दो में से एक को भी नींद नहीं आती थी ।''6

कहानीकार प्रेमचंद का युग संदर्भ

प्रेमचंद का युग सामाजिक एवं राजनीति एवं राजनीतिक उथल–पुथल का युग का था । इस युग के रचनाकारों की संवेदना में बड़ा तीव्र और गहन परिवर्तन उपस्थित हुआ । प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव आर्थिक रूप से जनता पर पड़ा । इस आर्थिक व्यवस्था का अवलोकन प्रेमचंद कर रहे थे । भारत की इस बिगड़ती हुई दिशा के जिम्मेदार अंग्रेज, जमींदार, सामंत, सरकारी अधिकारी आदि थे । प्रेमचंद के युग में औद्योगिक तथा वैज्ञानिक अर्थतंत्रा के विकास के साथ ही वैयक्तिक स्वार्थ भी प्रमुख होने लगा था, जिसके कारण संयुक्त परिवार चरमराने लगे थे । प्रेमचंद ने अपने आपसपास चरमराते हुए समाज की विभिन्न समस्याओं को अपनी कहानियों का आधार बनाया । प्रेमचंद ने स्पष्ट लिखा है – ''साहित्य अपने काल का प्रतिबिम्ब होता है, जो भाव और विचार लोगों को स्पंदित करते हैं । वही साहित्य पर भी छाप डालते हैं।''7 प्रेमचंद ने गॉव ही समस्या, संस्कृति तथा जीवन की समग्र स्थितियों को अपनी लेखनी के द्वारा जीवन्तता प्रदान की है ।

जैसा कि प्रेमचंद ने 'नया विवाह' कहानी में दिखाया है। ठीक इसी प्रकार की समस्या 'आधार' कहानी में भी दिखाई गई है । इस कहानी में पॉच वर्षीय देवर के साथ अनूपा का विवाह दिखाया गया है, जो अनमेल विवाह का प्रत्यक्ष उदाहरण है । अनमेल विवाह के संदर्भ में प्रेमचंद की कहानी 'उद्धार', 'नरक का मार्ग', 'आगा–पीछा' आदि कहानियॉ उल्लेखनीय हैं । प्रेमचंद ने तत्कालीन हिन्दू धर्म की रूढ़िग्रस्त वैवाहिक पद्धतियों के संदर्भ में स्पष्ट लिखा है – 'मैं कहता हूँ कि हमारा समाज अब भी नहीं समझता और स्त्रियों के साथ इन्साफ का बर्ताव नहीं करता तो बहुत मुमकिन है कि वह दिन जल्द आने वाला है जब हिन्दुओं के घर की लड़कियॉ अत्याचारों से घबराकर अपनी इच्छानुसार शादियॉ कर लिया करेंगी ।''8 प्रेमचंद ने हिन्दू समाज की दोषपूर्ण वैवाहिक प्रथा के सम्बन्ध में लिखा है –''हिन्दू समाज की वैवाहिक प्रथा इतनी दूषित, इतनी चिन्ताजनक और भंयकर हो गई है कि कुछ समझ में नहीं आता, उसका सुधार कैसे हो ?... दहेज की दर दिन दूनी रात चौगुनी, काल के जल वेग के समान बढ़ती चली जा रही है ।''9

प्रेमचंद युग की धार्मिक स्थिति अत्यंत भयावह थी । सुधारवादी आंदोलनों के द्वारा अंध–विश्वास, पाखंड एवं आडम्बरों को दूर करने का प्रयास के अंधविश्वास का फायदा उठाना इन पुजारियों और पंडों का धंधा है और इसलिए मैं उन्हें समाज का अभिशाप समझता हूँ और उन्हें अपने अद्यः पतन के लिए उत्तरदायी समझता हूँ ।''10 प्रेमचंद ने धर्माडम्बरों का सर्वथा विरोध किया है, क्योंकि वे मानते थे कि धर्म के द्वारा समाज के सामान्य व्यक्तियों को कठोर यातनाऍ सहन करनी पड़ती हैं । प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में ब्राह्मण वर्ग के ढोंग का पर्दाफाश किया ।

प्रेमचंद युग में अछूत समाज अत्यंत निरीह प्राणी था । उसे सम्पूर्ण समाज के अधिकारों से वंचित कर दिया गया था । धर्म नीति और कुरीतियों के कारण आम व्यक्ति दम तोड़ रहा था। 'सद्गति', 'ठाकुर का कुऑं', 'कफन', मृतक भोज', 'मंदिर' आदि कहानियों में इस समस्या को उद्घाटित किया गया है ।

प्रेमचंद युग में किसानों की दशा अत्यंत सोचनीय थी । किसान कर्ज के भार से दब चुका था । नंगे बदन दिन–रात मेहनत करने के बाद भी किसान को भरपेट भोजन नसीब नहीं हो पाता था । अनाज खलिहान से कर्जदार ढो ले जाते थे और जो बच जाता था, वह लगान अदा करने में चला जाता था । खेती की लागत भी वसूल करना मुश्किल हो गया था, जिसके कारण किसान मजदूर बनते जा रहे थे । प्रेमचंद ने लिखा है – ''दुनिया में, मैं महात्मा गांधी को सबसे बड़ा मानता हूँ । उनका ध्येय भी यही है कि मजदूर और किसान सुखी हों । इन लोगों को आगे बढ़ाने के लिए आंदोलन चला रहे हैं और मैं लिखकर उनकी हिमायत कर रहा हूँ ।''11 प्रेमचंद के व्यक्तिव एवं कृतित्व के ऊपर गांधी जी का विचारधारा का स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है । प्रेमचंद हिन्दी के पहले ऐसे सशक्त रचनाकार हैं जिनके साहित्य में भारतीय जनता मुख्यतः किसान वग्र के जीवन का व्यापक यथार्थ और उनकी चेतना के विभिन्न पहलू विशेष संदर्भ में रचे गये हैं । किसान में जीवन के प्रति गहरी एकात्मकता और सहानुभूति प्रेमचंद साहित्य में मिलती है ।

प्रेमचंद की कहानी 'डामुल कैदी' में मिल मजदूरों के आंदोलन की झॉंकी प्रस्तुत की गई है । मिल मालिकों का अत्याचार तथा उनकी दमन नीति का पर्दाफाश इस कहानी में देखने को मिलता है । 'विश्वास' कहानी में जनता आंदोलन इसलिए करती है कि अनाज पर कर लगा दिया जाता है । एक ओर जनता भूखो मर रही है, दूसरे अनाज पर कर, तीसरे कर्जदार की गर्दन पर सवार महाजन । इन तीनों विपत्तियों ने किसानों एवं मजदूरों को आंदोलन के लिए बाध्य कर दिया । प्रेमचंद ने अपनी विचारधारा को इस कहानी के माध्यम से जनता तक पहुॅंचाने का प्रयास किया और उन्हें अधिकारों के प्रति सचेत भी किया । 'जेल' कहानी में लोग स्वराज्य प्राप्त करने के लिए जुलूस निकालते हैं । लोग कहते हैं हम जीवित हैं, अटल हैं और मैदान से हटे नहीं हैं । 'समरसता' कहानी का नायक गॉव की स्थिति से गॉव वालों को अवगत कराता है जिसके कारण गॉव के लोग स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए तैयार हो जाते हैं । स्वदेशी आंदोलनों में सभी वर्गों, खासकर निम्न और मध्यम वर्ग ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया । इन आंदोलनों का उद्देश्य देश की पराधीनता को स्वाधीनता में बदलना था । प्रेमचंद की कलम ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति का प्रदर्शन करते हुए लोगों में जागरूकता फैलाने का कार्य किया । 'जेल' कहानी में मृदुला का साहस और धैर्य देखने योग्य है । 'समरयात्रा' में नोहरी की भूमिका सराहनीय है । 'लावान' कहानी में अम्बर का त्याग प्रशंसनीय है । 'आहुति' प्रेमचंद की राष्ट्रीय आंदोलन की भावभूमि पर लिखी कहानियों में महत्त्वपूर्ण है ।

प्रेमचंद के कथा साहित्य में जिस युग का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है, वह गुलामी का दौर था । साम्राज्यवादी, सामंतवादी और पूंजीवादी व्यवस्था के कारण भारतीय जनता बेहाल थी । किसान–मजदूर शोषित एवं पीड़ित जीवनयापन के लिए विवश था । चारों तरफ शोषण, अन्याय एवं दिशाहीनता का साम्राज्य फैल चुका था । ऐसे माहौल में प्रेमचंद ने अपनी लेखनी द्वारा आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को प्रश्रय देने का कार्य किया । प्रेमचंद ने शोषणकर्त्ता जमींदार, सूरखोरों, महाजनों, पुरोहितों व सरकारी कर्मचारियों द्वारा शोषित मध्यवर्गीय समाज को झकझोरा है, यही उनके आदर्श का धरातल है । प्रेमचंद की कहानियों में युग और परिवेश की प्रतिछाया है । 'बांका जमींदार' कहानी में जमींदारों के कृषक वर्ग पर हुए हृदय विदारक अत्याचार को दिखाया गया है ।

प्रेमचंद कहानी साहित्य सृजन में 'अनमोल रतन' से क्रमशः 'पूस की रात' और 'कफन' तक पहुॅंचे थे । प्रेमचंद ने आरम्भिक कहानियों में सुधारवादी आदर्शों को ही अपनाया है । इन दो कहानियों में प्रेमचंद ने समाज की अनेक समस्याओं का पर्दाफाश किया है । 'कफन' में विषमतामूलक समाज के ढांचे पर प्रहार किया है । सन् 1930 में प्रकाशित 'आहुति' के समूचे रचनाविधान को देखें तो महाजनी सभ्यता और

संस्कृति का प्रारम्भिक रूप दिखाई देता है। प्रस्तुत कहानी में पूंजीवादी विरोधी चेतना का स्वर सुनाई देता है। सन 1934 में प्रकाशित कहानी 'नशा' अपनी रचनादृष्टि और कलात्मक स्वरूप में इतनी आधुनिक है कि यह आज भी नहीं जान पड़ती है। सन् 1934 में पकाशित 'बड़े' भाई साहब' नामक कहानी में सामाजिक यथार्थवाद दिखाई देता है। सन 1936 ई. में प्रकाशित 'कफन' कहानी में दो प्रमुख तत्व हैं–पहला ग्रामीण जीवन का जीवन्त घटनापूर्ण चित्र तथा दूसरा है आर्थिक जीवन की पृष्ठभूमि। इस कहानी की केन्द्रीय घटना है, बुधिया की मृत्यु। इस कहानी में दिखाया गया है कि आर्थिक व्यवस्था मानव को इतना अमानवीय बना देती है कि उसे कर्तव्य का ज्ञान ही नहीं रहता। प्रेमचंद ने सन् 1930 से लेकर 1936 तक की कहानियों में पूंजीवादी विरोध चेतना का परिचय दिया है। इस दौर की अधिकांश कहानियॉं 'कफन', 'पूस की रात', 'ईदगाह', 'नशा', 'गुल्ली डड़ा' आदि आलोचना की भावभूमि से लिखी गई हैं। 'विध्वंश' और 'लोकमत का सम्मान' कहानियों में जमींदार वर्ग के अत्याचारों का सजीव यथार्थ वर्णन किया है।

प्रेमचंद युग सामाजिक, धार्मिक रूढ़ियों से बुरी तरह ग्रस्त था । प्रेमचंद ने धार्मिक रूढ़ियों का विरोध 'निमंत्रण', 'रामलीला', 'मनुष्य का परम धर्म', 'बाबाजी का भोग', 'गुरू मंत्र', 'सद्गति', 'ठाकुर का कुऑं' आदि कहानियों में किया है । समाज की कुत्सित मान्याओं एवं रूढ़ियों का प्रेमचंद ने अपने कक्षा साहित्य में खुलकर विरोध किया है ।

प्रेमचंद ने भारतीय किसान को अपने कथा साहित्य का महानायक चुना है क्योंकि किसान का जीवन एक ऐसा आदर्श है जो युग युगों से अपने दुःख को अपने अंदर समेटकर लोगों के लिए रोटी का प्रबंध करता रहता है । उनके हृदय में ग्राम्य परिवेश के प्रति अत्यंत सहानुभूति इसलिए थी क्योंकि उन्हेंाने ग्रामीणों की बेबस, बेजुबान, दासता से भरे जीवन से आक्रांत मजदूर और किसानों को देखा था । प्रेमचंद युग में किसानों का चौतरफा शोषण हो रहा था । एक ओर जमींदार, कारिन्दे, सरकारी कर्मचारी आदि इनका शोषण कर रहे थे, वहीं दूसरी ओर परम्पराबद्ध तरके से पण्डे पुजारी एवं पुरोहितों द्वारा भारतीय किसानों का शोषण हो रहा था । 'वरदान' नामक कहानी में गरीबी का सजीव चित्रण किया गया है । 'मुक्ति मार्ग', 'सवा सेर गेहूॅं', 'घासवाली', 'मृतक भोज' आदि कहानियॉं किसानों के शोषण की जीवन्त गाथा है । प्रेमचंद ने अपनी 'सज्जनता का दंड' और नमक का दारोगा' कहानियों में शासन व्यवस्था में प्रचलित भ्रष्टाचार को उद्घाटित किया है ।

प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में किसी संभ्रांत वर्ग का जीवन व्यतीत करने वाले चरित्र को अपनी कहानियों का कर्णधार नहीं बनाया है । अपितु शोषित आम जनता को अपनी कहानियों में स्थापित करके अपने कथा साहित्य को प्रशस्त किया है । प्रेमचंद ने राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्तर पर तत्कालीन समाज की विषमता, सच्चाई, शोषण और विद्रूपता को अपनी कहानियों में पूरी तन्मयता एंव सजीवता के साथ चित्रित किया है । इस प्रक्रिया के तहत उन्होंने अपनी कहानियों में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को प्रश्रय दिया है । समाज में उपेक्षा का शिकार अछूत वर्ग, पूंजीपति एवं मिल मालिकों के शोषण का शिकार मजदूर वर्ग तथा जमींदारों के जुल्म का शिकार किसान वर्ग इन सभी में प्रेमचंद ने वर्ग चेतना लाने का अद्भुत कार्य किया है ।

संदर्भ

1. डॉ. हुकमचंद राजपाल, विविध बोध–नये हस्ताक्षर, पृ. 10
2. डॉ. रामविलास शर्मा, आस्था और सौन्दर्य, प. 4
3. डॉ. मदनमोहन, आधुनिक हिन्दी–मराठी नाटकों में युगबोध, पृ.3
4. प्रेमचंद, कुछ विचार, पृ. 74
5. प्रेमचंद, साहित्य का उदेद्श्य, पृ. 14
6. सं.डॉ. राजेन्द्र कुमार, प्रेमचंद की कहानियॉं:परिदृश्य और परिप्रेक्ष्य, पृ.46
7. प्रेमचंद अलग्योझा, मानसरोवर (भाग–1), पृ. 28

8. शिवरानी देवी, प्रेमचंद घर में, पृं. 7
9. प्रेमचंद, मानसरोवर (भाग–3), पृ. 39
10. अमृतराय, चिट्ठी पत्री (भाग–2), पृ. 88
11. शिवरानी देवी, प्रेमचंद घर में, पृ. 93